।। ओ३म् ।।

याग के होता

(पूर्वार्द्ध)

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद-वाणी में उस परमपिता-परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वह परमपिता-परमात्मा अनन्तमयी है और उसका ज्ञान और विज्ञान भी अनन्तमयी माना गया है तो इसलिए वह अनन्तवान है और जितना भी यह जड़-जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह परमपिता-परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं।

आज का हमारा वेद-मन्त्र यज्ञम ब्रह्मा तपम व्रहे व्रता वेद का मन्त्र कहता है हे मानव! तू तपस्वी बन तपाम भुतम ब्रह्मणा वृतम देवत्वाः जब तू तपस्या में परणित हो जाएगा तो तू देवता की कोटि में और अपने देवत्वः को प्राप्त होता रहेगा। हमारे यहां वेद का मन्त्र प्रायः तपने के लिए अपनी वार्ता प्रगट कर रहा है। उक्त वेद-मन्त्र कहता है यज्ञनम ब्रह्मा वर्णस्सुतम देवाम भुतम ब्रह्मा-वेद का वाक् यह कहता है कि हे मानव! तू पंच-महाभूतों के लोक में विद्यमान है और यह जो तेरा मानवीय शरीर है यह पंच-महाभूतों का एक पिण्ड है और इसमें चेतना अपना वास कर रही है और चेतना में चेतना का जब भास होने लगता है तो मानव तू अपनी महानता को प्राप्त होता हुआ तू

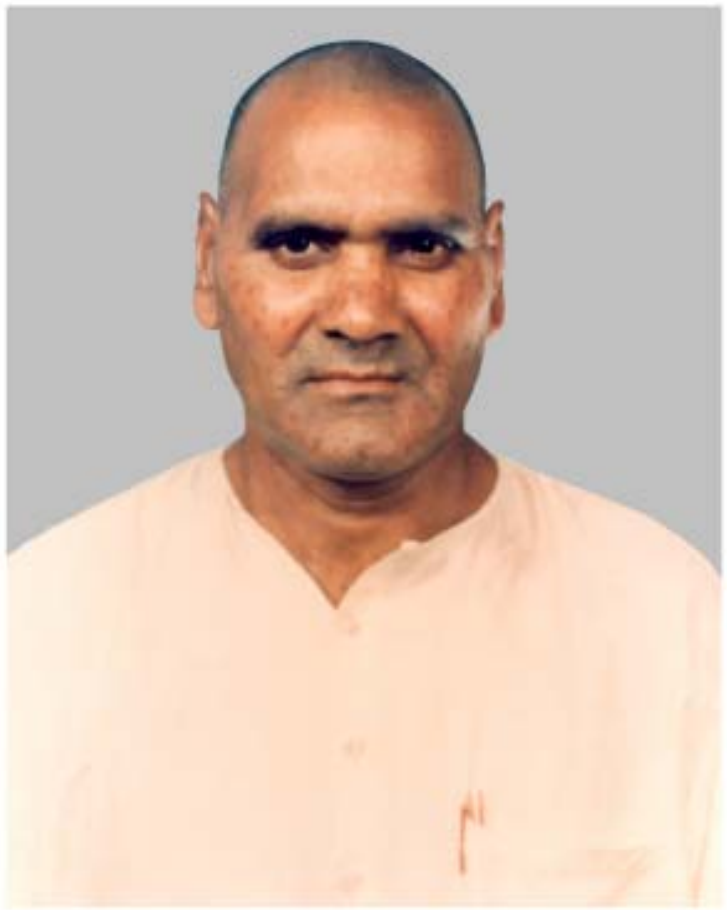

Bhram Rishi KrishanDutt Ji Maharaj Patrika October 2011

प्रभु से विनय

हे प्रभु! मेरे इस जीवन में नाना प्रकार की बाधाएँ हैं परन्तु जो वह सुपथ हैं उस पथ पर चलने के लिए प्रभु! मेरे लिए कंचन एक बहुत ही बाधक बना हुआ है। वह जो कंचन है वह मेरी ममतामयी धारा को बना रहा है जिससे प्रभु! मेरा जीवन विकसित नहीं हो पाता क्योंकि तेरे राष्ट्र में कंचन नहीं होता, तेरे राष्ट्र में प्रकाश होता है। हे प्रभु! यह जो संसार का लुभावना जगत् है जिसमें नाना प्रकार के सुन्दर रूप और कंचन मुझे ऐसे लुभाते रहते हैं जैसे प्रभु! प्रातःकाल में मानव अपनी शय्या को त्याग देता है। हे प्रभु! उसे मैं नहीं चाहता। मैं सदैव यह चाहता रहता हूँ कि मेरे हृदय से कंचन और कामनी दोनों से मैं उदासीन हो जाऊँ। प्रभु! जब तक मैं दोनों से उदासीन नहीं हो सकूँगा तब तक मेरा जीवन उत्तम पथ को प्राप्त नहीं होगा। मुझे स्मरण आता रहता है क्योंकि हमारे सत्संग की जो पुनीत वेला है उसमें वास्तव में हमें यही वस्तु तो प्राप्त होती है। जब हम विचारते रहते हैं कि सँसार में हमारा जातीय जो अभिमान है वह भी हमारे जीवन में एक महान बाधक बना हुआ है। हे प्रभु! सँसार में जब हम प्राणीमात्र में आपकी प्रतिभा को दृष्टिपात करेंगे तो हमारा जीवन और इस सँसार से वास्तव में उदासीन बन सकते हैं। जब तक हमारा जीवन इन तीनों विचारों में भ्रमण कर रहा है, जातीय अभिमान है, कंचन अभिमान है, कामनी अभिमान है, यह तीनों ही हमारे जीवन को नष्ट-भ्रष्ट करते चले जा रहे हैं। हे प्रभु! मैं इसको नहीं चाहता उस मार्ग में। क्योंकि यह मार्ग तो एक ऐसा मार्ग है जिस पथ पर जाने के पश्चात इस मार्ग की एक उज्जवल धारा हमारे मानवत्व को पवित्र बनाती चली जाती है।

पूज्यपाद गुरुदेव

अंक : 469 समग्र अंक : 544
वर्ष : 40 समग्र वर्ष : 46

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय		पृष्ठ
1.	प्रभु से विनय	पूज्यपाद गुरुदेव	1
2.	अनुक्रम		2
3.	याग के होता (पूर्वार्द्ध)	पूज्यपाद गुरुदेव	3-15
4.	सत्यवादी	पूज्यपाद गुरुदेव	16-28
5.	उद्बोधन	पूज्यपाद गुरुदेव	29
6.	मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम	पूज्यपाद गुरुदेव	30-31
7.	दीपावली	पूज्यपाद गुरुदेव	32-33
8.	भगवान् कृष्ण की सौलह हजार गोपीकाए	पूज्यपाद गुरुदेव	34-35
9.	दान, सूचना इत्यादि		36-44

मासिक सहयोगी

श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री मैं. ओम् बायो इन्डस्ट्रीज धीर खेड़ा हापुड़ (श्री सुरेश त्यागी व श्री विवेक त्यागी)	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद	500 रुपये
श्री सुकेश त्यागी, आर. के. पुरम, नई दिल्ली	500 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी, सुपुत्रश्री-जयप्रकाशजी मकनपुर, गाजि.	500 रुपये
श्री पूनम त्यागी, नोएडा	500 रुपये
श्री वी. पी. सिंह, होशियारपुर, पंजाब	500 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री नानकचन्द, देहरादून	200 रुपये
श्रीमती शशि गुप्ता, नोएडा,	125 रुपये
डॉ. ओ. पी. आर्य, आगरा	125 रुपये
श्री गुलजार सिंह, जगत पुरी, कृष्णा नगर, दिल्ली	100 रुपये
श्रीमती वीना त्यागी, अलीगढ़।	100 रुपये

ज्ञानेन्द्रियों को मृत्यु से पार ले जाओ मानों देखो **अपने नेत्रों को अग्नि स्वरूप स्वीकार करो और वाणी को मानों रसों में परणित करते चले जाओ और प्राणम ब्रह्मा व्रतम शब्दों में देखो श्रोतों को शब्दों में, दिशाओं में परणित कर दो तो यह मृत्यु से पार हो जाऐंगे।** इस प्रकार मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने ब्रह्मचारियों के मध्य में इस प्रकार का जब वर्णन किया तो उन्होंने कहा मंगलम ब्रहे मानों देखो **मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार यह आन्तरिक जगत कहलाता है** मानों देखो मन की धाराएं हैं यह मन बड़ा विशाल यह प्रकृति का सूक्ष्म तन्तु माना गया है परन्तु देखो मन की धारा चित्त कहलाता है। चित्त में नाना जन्मों के संस्कार विद्यमान होते हैं और अहंकार मानों देखो उसको सुगठित करने वाला है और मुनिवरो देखो ब्रह्मणे प्राणा कृतम देवा मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार अपने में ही मानों देखो चित्त संस्कार की प्रतिभा कहलाती है। तो आज बेटा मैं तुम्हें विशेष चर्चा या विशालता से इन वाक्यों को वर्णन नहीं करूंगा केवल तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूं और वह परिचय केवल कि मन की नाना धाराएं है और बुद्धि कई प्रकार की कहलाती है जैसे बुद्धि, मेघा, ऋमभरा और प्रज्ञा कहलाती है यह मानों देखो चार प्रकार की बुद्धि हैं। चित्त में हमारे यहां नाना जन्मों के संस्कार विद्यमान रहते हैं इन्हीं संस्कारों के आधार पर मानव का यह शरीर, शरीर को आत्मा प्राप्त करता रहता है पंच-महाभूतों के शरीरों में प्रवेश करता हुआ आत्माम भुतम ब्रह्मा।

सत्रह-होता

मेरे पुत्रों! देखो ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया उन्होंने कहा प्रभु! यह तो मैंने कई कालों में आचार्यों ने मुझे पूर्व काल में भी वर्णन कराया है मैं यह जानना चाहता हूं मानों वह सत्रह होता कौन से हैं? उन्होंने कहा पांच ज्ञानेन्द्रियां मानों पंच-महाभूतों मे रत्त होने वाली देखो प्रकृति की यह पंच-तन्मात्रा कहलाती हैं दस प्राण हैं और मन और बुद्धि कहलाते हैं मानों देखो ये अपने में अपनेपन का भान कराते रहतें हैं।

इस सागर से पार होने के लिए तत्पर हो जाता है। परन्तु आज का हमारा वेद-मन्त्र अपने में उद्गीत गा रहा है जैसे माता का पुत्र माता का गान गाता रहता है अथवा उसकी गाथा का वर्णन करता रहता है इसी प्रकार जैसे यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गाती रहती है। जब भी कोई संसार में विज्ञानवेत्ता होते रहे है उसी काल में उन्होंने पृथ्वी के ऊपर अन्वेषण किया और पृथ्वी को जानते हुए यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड को मापने लगती है अथवा उसकी गाथा गाने लगती हैं। उसी प्रकार प्रत्येक वेद-मन्त्र उस परमपिता-परमात्मा की गाथा गा रहा है जो परमपिता-परमात्मा ज्ञान और विज्ञान में रत्त रहने वाला है। तो यह बेटा आज का हमारा वेद-मन्त्र हमें उद्गीत गा रहा है जब हम किसी भी वेद-मन्त्र को ले करके अपना उद्गीत प्रारम्भ करते हैं तो प्रायः मानों देखो उसके उद्गीत में कोई न कोई ऐसी प्रतिभा होती है जिस प्रतिभा को अपने में अपनाता हुआ मानव सागर से पार होने के लिए प्रयास करता रहा है।

याज्ञिक बनने की प्रेरणा

तो आओ बेटा! आज मैं तुम्हें एक ऐसे ऋषि के द्वार पर ले जाना चाहता हूँ जहां एक वेद का मन्त्र हमें उद्गीत गा रहा है। वेद-मन्त्र कहता है यज्ञनम् ब्रह्मा वर्जसुतम देवाम भुतम भुताम भूतत प्रव्हाः लोकाम वेद का मन्त्र कहता है हे मानव! तू याज्ञिक बन मानों यज्ञनम ब्रह्मा संसार में जितना भी सुक्रियाकलाप है उस सर्वत्र का नाम ही एक याग रूप माना गया है। मेरे प्यारे! मुझे एक वाक् स्मरण आ रहा है जो मैंने तुम्हें पूर्व काल में भी वर्णन किया है, आज भी हमें स्मरण आ रहा है। मेरे प्यारे! अमृतम ब्रह्मा याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपनी यज्ञशाला में प्रायः अपने विद्यालय में विद्यमान रहते थे। प्रातः-कालीन उनके यहां नैतिकता में ब्रह्मचारियों के मध्य में विद्यमान हो करके अपने याग में परणित रहते तो बेटा एक समय वह ब्रह्मचारी अमृतम ब्रह्मा वेद का ऋषि कहता है यज्ञनम ब्रव्हा क्रतम देवा वेद का मन्त्र उच्चारण

करता हुआ ऋषि कहता है हे ब्रह्मचारियों! तुम मानों याज्ञिक बनो और तुम्हारा याग ही तुम्हें ऊर्ध्वा में गमन कराने वाला बनेगा। इस प्रकार जब बेटा याज्ञवल्क्य मुनि महाराज प्रातः-कालीन अपने विद्यालय में ब्रह्मचारियों को यह उपदेश दे रहे थे तो न्यौदा में उन्होने वेद-मन्त्रों का उद्गीत गाया और एक वेद-मन्त्र यह कहने लगा अमृतम अमृतम देवाम् भुतम यज्ञनम ब्रह्मा आत्मा-मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा हे ब्रह्मचारियों! वेद का मन्त्र कहता है कि प्रातः-कालीन तुम अपने गार्हपत्य नाम की अग्नि को जागरूक करते हुए तुम अपने में याज्ञिक बनो जिससे तुम्हारा अन्तर्त्मा मानों पंच-महाभूतों का जो लोक है यह जो तुम्हारा मानवीय शरीर है इसमें जो पंच-महाभूतों के लोक में आत्मा विद्यमान है वह मानों देखो उसका पंचीकरण होता रहे।

याग के होता

तो ऐसा बेटा! जब वेद के ऋषि ने वर्णन किया तो इतने में मुनिवरो देखो एक ब्रह्मचारी यज्ञदत नाम के उपस्थित हुए और यज्ञदत ब्रह्मचारी ने नमः कहते हुए बोले हे प्रभु! अमृतम उन्होंने एक रूपक बनाया एक ब्रह्मचारी रोहिणीकेतु उपस्थित हो गये और यज्ञदत ब्रह्मचारी ने कहा हे प्रभु! मेरे समीप एक यजमान है वह याग करना चाहता है तो कितने होताओं के द्वारा याग प्रारम्भ करे? याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा क्या वेद का अमृतम मन्त्र कहता है क्या **यजमान जब याग करना प्रारम्भ करें तो चौबीस होताओं के द्वारा याग होना चाहिए।** मेरे प्यारे! इन्होंने कहा प्रभु! यजमान याग करना चाहता है कितने होता हों? उन्होंने कहा कि सत्रह होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। जब पुनः यह प्रश्न किया कि महाराज यजमान याग करना चाहता है कितने होताओं के द्वारा याग होना चाहिए? तो उस समय याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा कि ग्यारह होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। जब पुनः प्रश्न किया क्या एक यजमान उपस्थित है वह याग करना चाहता है कितने होता होने चाहिए? उन्होंने कहा कि अमृतम

नौवः बृहे नौ होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। मेरे पुत्रों! उन्होंने जब पुनः यह प्रश्न किया क्या यजमान याग करना चाहता है कितने होता हों? तो उन्होंने सप्त होताओं का वर्णन किया। जब पुनः यह प्रश्न किया गया कि महाराज यजमान याग करना चाहता है कितने होता हों? तो उन्होंने कहा कि अंग-तम पंचाम भुतम पंच होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। जब पुनः यह प्रश्न किया गया कि महाराज यजमान याग करना चाहता है कितने होताओं के द्वारा याग होना चाहिए? तो उन्होनें कहा कि अपम्र तीन के द्वारा याग हो, तीन से दो होताओं से याग होना चाहिए। एक न हो तो अमृतम वेदाम भूतम ब्रह्मा यह जो आत्माम भुते यह सब भूतो को एकाग्र करने वाला एक अन्तर्वती चेतना है उसके द्वारा याग होना चाहिए।

चौबीस-होता

जब मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने इस प्रकार वर्णन किया तो यज्ञदत ब्रह्मचारी बोले हे प्रभु! यह चौबीस होता कौन से हैं जिनके द्वारा याग करें? उन्होने कहा चौबीस होताओं में देखो दस प्राण हैं प्राण, अपान, उदान, समान, व्यान, नाग, देवदत्त, धनञ्ज्य और कुरू, कृक्रल यह दस प्राण कहलाते हैं मानों दस इन्द्रियां हैं पांच ज्ञानेन्द्रियां पांच कर्मेन्द्रियां है और मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार यह चौबीस होता कहलाते हैं जिनके द्वारा यजमान याग करना चाहता है अथवा साधना में प्रवेश करना चाहता है। साधना भी इसी के द्वारा होती रही है। तो विचारवेत्ता ने कहा अमृतम याज्ञवल्क्य ने हे ब्रह्मचारियों! तुम मानों देखो सबसे प्रथम प्राण, प्राण को अपान में, अपान को व्यान में और व्यान को समान में और समान को उदान में प्रवेश करते हुए मानों देखो इसे अमृतम ये प्राणम ब्रव्हे कहलाता है। इसको हमारें यहां यह होता कहलाते हैं जिनके द्वारा मानव नाना प्रकार का भक्षण करता है अथवा यही भोगतव्य माना जाता है। तो इस प्रकार ऋषि ने वर्णन किया क्या यह इन्द्रियां हैं सबसे प्रथम ज्ञानेन्द्रियों का वर्णन आता है।

मेरे प्यारे! देखो सतोगुण में पालना है और रजोगुण में शासन है और तमोगुण में उत्पत्ति का मूल कहां जाता है। जो हमारे यहां वैदिक साहित्य में हम प्रवेश करते हैं तो मानों देखो उस समय यह माता में तीनों गुण प्राप्त होते रहते हैं। माता मेरे प्यारे! देखो अपने गर्भ-स्थल में धारण करती है वह उत्पत्ति का मूल तमोगुण कहलाता है और उसके पश्चात जब अनुशासन करती है वह रजोगुण कहलाता है जब उसका पालन करती है, लोरियों का पान करा रही है और माता तीन शब्दों का उच्चारण करती है कहती है बुद्धम, शुद्धम, निरंजनम ब्रह्मा क्रते वेद का मन्त्र उच्चारण कर रही है और यह कह रही है आत्मा तू शुद्ध है, निरंजन है, अखण्ड रहने वाला है। हे आत्मा! तू चैतन्य है मानों ज्ञानवान है इस प्रकार जब माता देखो इस प्रकार का उपदेश देती हुई और लोरियों का पान कराती है तो मानों वह सतोगुण में पान कर रही है और जब मुनिवरो देखो वह अनुशासन में लाती है हे बाल्य! तू योग्य बनों मानों तुम्हारा तुम्हारी प्रत्येक इन्द्रियां अनुशासित होनी चाहिए तो माता उस समय मुनिवरो देखो रजोगुण में परणित होती मानों देखो नाना प्रकार की विद्या प्रदान करती रहती है और देखो जब तमोगुण में माता के गर्भ-स्थल में शिशु विद्यमान है परन्तु देखो उस समय तरंग ब्रह्मा वर्णे देवाम भूतम देखो इच्छा होती है कि पुत्र योगाम् भूतम ब्रह्मे वह कहती है कि हे देवाम मैं पुत्र यागी बनना चाहती हूँ। तो प्रभु से याचना करती है मानों उस समय प्रकृति के मूल में तमोगुण प्राप्त हो जाता है उस समय उत्पत्ति के मूल में तमोगुण प्राप्त हो जाता है। तो वही रजोगुण है, वही तमोगुण है और वही सतोगुण और वही रजोगुण की प्रतिभा में सदैव निहित रहने वाला है। जब हम बेटा इसके ऊपर विचार-विनियम करते हैं तो यह गुणात्मक मानों देखो सर्वत्र ब्रह्मांण्ड हमें प्रायः दृष्टिपात आता रहता है और इसी में बेटा सर्वत्रता में विद्यमान हो करके मानव अपनी मानवीयता का अपने में ध्यान करता रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो इस प्रकार जब ऋषि ने वर्णन किया,

तो विचार आता है यह सत्रह होताओं का यह सूक्ष्म शरीर माना गया है। जब यह स्थूल शरीर को त्यागता है तो सूक्ष्म शरीर वायु मंडल में प्रवेश कर जाता है तो मानो देखो अपनी आभा में परणित होता हुआ अपने को प्राप्त होता रहता है। मेरे पुत्रों! इसी में कारण नाम का शरीर होता है आत्मा का जहां ज्ञान और प्रयत्न दोनों ही विशिष्ठ रह जाते हैं।

ग्यारह-होता

तो मेरे पुत्रों! देखो जब इस प्रकार ऋषि ने वर्णन किया तो यज्ञदत बोला कि प्रभु! यजमान यह जानना चाहता है क्या ग्यारह होता कौन से होते हैं? उन्होने कहा जब यजमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो जाए तो मानों देखो दस इन्द्रियां और ग्यारहवां मन कहलाता है यह ग्यारह होताओं के द्वारा यजमान मानों एकाग्र होता है, याग करता है मनम ब्रह्मा मनम ब्रव्हे क्रतम यह मन के द्वारा ही इन्द्रियों का जो स्त्रोत है जो मन से गुथा हुआ होता है और मन सारथी कहलाता है और मानों देखो उस रथ पर यह इन्द्रियां एक अश्व के समान होते हैं यह जब गमन करता है तो मन मानों देखो सारथी बन करके यह स्वार्थ को न त्यागता हुआ मानों देखो वह उसको अपनम ब्रह्मा त्याग करके वह सारथी बनता है और जो मानों देखो स्वार्थपरता में आता है तो यही मनस्तव कहलाता है। तो विचार आता रहता है मुनिवरो देखो यह रथ का सारथी है और इन्द्रियां इसके अश्व हैं और जब मार्ग में यह देखो कर्म जगत में यह रमण करता रहता है तो मानों देखो इन्द्रियां एकाग्र हो जब यजमान का देखों यह संसार रुपी याग पवित्र बनता है।

नौ-होता

मेरे पुत्रों! देखो ऋषि ने कहा कि महाराज यह नौ होता कौन से हैं? तो उन्होंने कहां नौनम ब्रह्मे देखो हमारे इस मानव शरीर का

जब प्रभु ने सृजन किया सृष्टि के प्रारम्भ में अथवा माता के गर्भस्थल में तो मुनिवरो देखो इस नौ द्वारों वाले इस शरीर का निर्माण किया। मेरे प्यारे! देखो दो चक्षु छिद्र हैं और दो घ्राण के छिद्र हैं और दो मानों चक्षु हैं इस प्रकार अम्रतम ब्रह्मे एक मानों उपस्थ और ग्रीवा यह नौ द्वार कहलाते हैं और नौ द्वारों पर नौ ऋषि विद्यमान रहते हैं। मेरे प्यारे **नौ द्वारों को एकाग्र करना उनके विषयों को विचारना अथवा उन देवताओं के ऊपर अध्ययन करने का नाम ही मानों याग करना है** वह साधक मानों इस प्रकार के याग में परणित हो जाते हैं। तो उन्होंने कहां कि नौ द्वारों के द्वारा हम जब याग करते हैं **नौ द्वारों के देवताओं को जान करके उसी देवताओं के लिए हूत करते हैं तो मानों हम देवत्व को प्राप्त हो जाते हैं।** वह देवम भूतम ब्रह्मा वेद का वाक् कहता है कि वह देवता देव-लोक को प्राप्त होता रहता है।

सप्त-होता

मेरे पुत्रों! देखो पुनः उन्होंने कहा, यज्ञदत जी ने क्या महाराज, हे प्रभु! मैं जानना चाहता हूँ कि यह सप्त द्वार सप्तम ब्रहे देखो सात होता कौन से हैं? उन्होंने कहां देखो सप्त होता मानों देखो उनमें एक वाणी है, दो चक्षु मानों दो श्रोंत्रों के छिद्र हैं, एक घ्राण है यह सप्त ऋषि कहलाते हैं मानों किसी में कश्यप है यह वाणी यह अत्रि है इसी प्रकार मानों कहीं वशिष्ठ और विश्वामित्र मानों इन द्वारम ब्रह्मे देखो इन चक्रम मुझे इन द्वार पर विद्यमान रहते हैं इनके द्वारा ही तो याग कहलाता है इनके द्वारा ही तो मेरे प्यारे! देखो प्राण अपने में प्राणत्व का कियाकलाप करता रहता है।

पंच-होता

मेरे पुत्रों! उन्होंने कहा पंचम भूताम भूतम मानों पंच-होताओं के द्वारा याग होता है। यह पंच होता मेरे प्यारे! देखो इस शरीर में जब शरीर की रचना कर्ता ने, प्रभु ने शरीर की रचना की तो बेटा देखो

उसमे पंचम महाभूतों का नृत्य किया। सबसे प्रथम इसमें अन्तरिक्ष है उसके पश्चात मुनिवरो देखो वायु है और तेजोमयी अग्नि है और जल तत्व है और यही गुरुत्व माना जाता है। जब मेरे पुत्रों! देखो विज्ञान के वांगमय में प्रवेश करते हैं तो विज्ञान में मानों देखो तीन प्रकार के परमाणुओं का व्यवधान होता रहता है और सर्वत्र जितना भी विज्ञान है संसार का वह त्रिवाद में परणित रहता है। मानों देखो तेजोमयी, तरलत्व और गुरुत्व यह तीन प्रकार के परमाणु हैं बेटा जिनमें विज्ञान निहित रहता है। इसी से हमारा शरीर कटिबद्ध रहता है इसी में ओत-प्रोत होता रहता है और आत्मा इसमें विद्यमान है जो चेतना बन करके इनका अपना नृत्य करा रहा है। यह पंचा जैसे महात्मा जालवी ऋषि से एक समय महर्षि प्राणकेतु ने कहा हे प्रभु! यह आत्मा का लोक क्या है जो आत्मा मानम ब्रव्हे जहां वास करता है। तो उन्होंने, **महात्मा जालवी ने यह कहां कि आत्मा का जो लोक है वह पंच-महाभूत है** और पंच-महाभूतों के लोक में यह आत्मा विद्यमान है। तो मुनिवरो देखो यह पंचीकरण हो रहा है इनके द्वारा यजमान जब याग करता है इन तेजोमयी को जान करके अग्न्याधान करता है और तरलत्व को जान करके वह मानों देखो मेखला में जल का व्यवधान करता है और गुरुत्व को जान करके वह साकल्य के द्वारा याग करता है। तो मेरे पुत्रों! देखो इस प्रकार जब ऋषि ने वर्णन कराया क्या यह पंचीकरण हो रहा है और पांच होताओं के द्वारा यजमान अपने में याग करने वाला बनें।

तीन-होता

मेरे प्यारे! देखो यज्ञदत ब्रह्मचारी बोले हे प्रभु! मैं ये जानना और चाहता हूँ क्या हे प्रभु! यह तीन होता कौन से हैं? उन्होंने कहां तीन होता मानों देखो जब इस शरीर का सुगठित संसार का सुगठिता आ जाती है तो तीन प्रकार के गुणों का व्यवधान होने लगता है और तीन गुणों में मुनिवरो देखो सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण कहलाते हैं।

कि हम परमपिता-परमात्मा की महिमा को जानने वाले बनें और याज्ञिक बनें और अपनी मानवीयता को ऊँचा बना करके सागर से पार होने का प्रयास करें। यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा तो मैं तुम्हें शेष चर्चाए कल प्रगट करेंगे। अब वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन होगा।

ओ3म् देवाः आभ्याम् मनु गायन्त्वा रथम् माहं प्राची रथाः।
ओ3म् रथम्माहं प्राची गतं माः वायु रथा।
ओ3म् देवं भविता आभ्यां मनः वाचञ्गताः।
ओ3म् सर्वं भू वरूणाऽहं वाचस्वग्नं ब्रह्म आपाः।

अच्छा भगवन्! आज्ञा।

दिनॉक १२–मई–१९९२
समय : रात्रि ८ बजे।
स्थान : श्री रामनारायण त्यागी,
नई–मन्डी, मुजफ्फरनगर।

❐❐

ऋषि ने कहां है कि तीन होताओं के द्वारा यजमान कहता है प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा कह करके मानों हूत करना प्रारम्भ करता है।

दो-होता

मेरे प्यारे! देखो इसी प्रकार जब ऋषि ने अपना वाक् ब्रह्मचारियों के मध्य में प्रारम्भ किया तो यज्ञदत ब्रह्मचारी बोले कि प्रभु यह भी हमने जान लिया परन्तु हम यह जानना चाहते हैं दो होता कौन से हैं जिनके द्वारा यजमान याग करता है? उन्होनें कहा दो होता अमृतम ब्रह्मे देखो वह जब यजमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान होता है तो दो होता मानों ब्रह्म और प्रकृति को दोनों को अपना साथी बना करके देखो यजमान याग करता है और वह कहता है वह मानों जितना भी प्रदार्थतम ब्रहे जैसे प्राण और मन की विवेचना करने वाला साधक कहता है **मन प्रकृति का सूक्ष्म तन्तु है और यह जो प्राण है यह ब्रह्म का सूक्ष्म तन्तु माना गया है परन्तु ज्ञान से दोनों जड़ पदार्थ हैं।** एक मानों देखो परमात्मा का प्रतिनिधि चेतना का हमें भान कराता है, गति का भान कराता है और एक ज्ञान का भान कराता है और ज्ञान को मानों देखो एक आत्मा के सन्निधान मात्र से क्रियाकलाप कर रहा है और एक मुनिवरो देखो ब्रह्म के सन्निधान मात्र से अपनी गति कर रहा है और गतियों में रमण करने वाला ही मानों इनको जानना ही हमारा याग है और एकाम भूतम ब्रह्मा ब्रहे। मेरे प्यारे एक ब्रह्म है जिस ब्रह्म के लिए हम सदैव उपास्य बने रहते हैं। यह हमारा उपास्थ देव है और ब्रह्म की याचना करते मुनिवरो देखो इस सागर से मानव पार हो जाता है। तो मेरे पुत्रों! देखो मुझे स्मरण आता रहता है याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का जीवन अपने में बड़ा सार्थक माना गया है। ब्रह्मचारियों को प्रातः-कालीन बेटा वह अपने में उपदेश दे रहा है और उपदेश देता हुआ कहता है हे ब्रह्मचारियों! तुम्हें नैतिकता में परणित होना चाहिए और तुम्हारा नैतिक जीवन इतना उर्ध्वा में गमन

करता रहे जिससे तुम्हारा जीवन एक महानता को प्राप्त हो जाए। तो आओ मेरे प्यारे! मैं आज तुम्हे विशेष चर्चा प्रकट करने नहीं आया हूँ विचार-विनियम केवल यह कि हमारे यहां बेटा याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने ब्रह्मचारियों को वर्णन कराते हुए कहां है समभ्वम ब्रह्मा सम्भवे लोकम ब्रहे क्या तुम मानों देखो एक ब्रह्म से लेकर के एक ब्रह्म की उपासना करो और द्वितीय मानों देखो मनस्तव, प्राण का दोनों का मिलान करों और मुनिवरो देखो रजोगुण, तमोगण, सतोगुण इन तीनों को जान करके तुम ब्रह्मांण्ड को जानने का प्रयास करों और मुनिवरों देखो सप्त होताओं को जान करके तुम अपने मन-मस्तिष्क को एकाग्र करके अपने में रत्त हो जाओ और ग्यारह इन्द्रियों के द्वारा मानों तुम अपने को एकाग्र करते हुए अपने चित्त-मण्डल में प्रवेश हो जाओं और मुनिवरो देखो सत्रह-होताओं के द्वारा अपने इस सुक्ष्म शरीर को जानने का प्रयास करों और मुनिवरो देखो यह चौबीसम् होताम् भूतम सूक्ष्म चौबीस होताओं के द्वारा अपने स्थूल शरीर को जानो। मानों देखो यह विशाल मण्डल है। आज मैं इस विशाल मण्डल की विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट न करता हुआ केवल यह क्या याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने जब यज्ञदत से यह कहा तो यज्ञदत मौन हो गया और ब्रह्मचारी यज्ञदत ने कहा कि प्रभु! आपको धन्य है आप ने मुझे एक महानता का विशेषण कराया है आपको धन्य है प्रभु। उन्होंने कहा वेदोंम भूतम ब्रह्मे यह वेद-मन्त्रों में इस प्रकार का ज्ञान और विज्ञान मानों देखो निहित रहता है। परमपिता-परमात्मा ने सृष्टि के पिता ने इस संसार की जब रचना की तो मानों देखो यह ब्रह्माण्ड और पिण्ड दोनों का निर्माण किया और दोनो में एक ही तुलना में लाने का इन्होनें प्रयास किया। तो विचार आता रहता है कि हम पिंड और ब्रह्माण्ड में परणित होते हुए मुनिवरो देखो अपने को पिंड पिडंणम् ब्रह्मांण्डम् ब्रहे इस पिण्ड को ब्रह्माण्ड रुप स्वीकार कर उपास्य देव की उपासना करते रहें। तो आओ बेटा! देखो आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूँ।

आज मैं तुम्हें केवल संक्षिप्त सा परिचय देने आया हूँ और परिचय यह है कि हम परमपिता-परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते रहें और इस ब्रह्मांण्ड और संसार को जानते हुए अपने मे मानों देखो अपने में ही समाहित हो जाएं जिससे बेटा देखों हमारा मानवीयत्व ऊँचा बन जाए। तो आओ मेरे प्यारे! देखो आज का विचार क्या कि हम परमपिता-परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस संसार-सागर से पार हो जाएं। तो यज्ञदत नाम के ब्रह्मचारी अपने में मौन हो गये और देखो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने विद्यालय में नित्य-प्रति मानों ब्रह्मचारियों को किसी न किसी वेद-मन्त्र को ले करके उद्गीत गाते रहे और उसमें अपना उद्गान गाते हुए ब्रह्मचारियों को ऊँचा बनाना और यह कहना हे मम! हे ब्रह्मचारियों! तो मेरे प्यारे देखो विचार-विनिमय यह कि हम मृत्युंजय बनना चाहते हैं। तुम्हें मृत्यु से पार होना है तुम्हें मृत्युंजय बनना है जिससे तुम मृत्यु से पार हो करके क्योंकि प्रत्येक मानव जितने भी क्रियाकलाप करता है वह मृत्यु से पार होने के लिए करता है और वह यह चाहता रहता है कि मेरी मृत्यु नहीं होनी चाहिए। वह मृत्युंजय बनना चाहता है। तो बेटा मृत्युंजय वह कहलाता है जो अपने ज्ञान में परणित हो जाता है क्योंकि ज्ञानी की, ब्रह्मज्ञानी की मृत्यु नहीं हुआ करती है। जैसे राजा जनक की सभा में बेटा याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने यही कहा था जब अर्द्धभाग ने यह कहा कि मृत्यु की मृत्यु क्या है? तो उस समय महर्षि याज्ञवल्क्य ने कहा था अमृतम् मत कहो कि मृत्यु की मृत्यु नहीं होती। अरे! मृत्यु की मृत्यु ब्रह्म है। ब्रह्म को जानने वाले की मृत्यु नहीं हुआ करती है। तो ज्ञानी बनें और तपस्वी बनें जिससे हमारा ज्ञान तप के साथ होगा तो जीवन हमारा पवित्र होगा।

यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा तो मैं शेष चर्चाए कल प्रगट कर सकूंगा। **आज के विचारों का अभिप्राय यह**

।। ओ३म् ।।

सत्यवादी

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमनें पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद-वाणी में उस परमपिता-परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वह परमपिता-परमात्मा अनन्तमयी हैं और उसका ज्ञान और विज्ञान प्रायः अनन्तमयी माना गया है। हमारे यहाँ सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके और वर्तमान के काल तक नाना प्रकार का विचार विनिमय होता रहा है और प्रत्येक मानव की एक इच्छा रहती है क्या मेरा जीवन सदैव प्रकाश में रत्त हो जाए और उसके मनोनीत हृदय में ये भी इच्छा होती है कि मैं परमपिता-परमात्मा के समीप चला जाऊँ और तृतीया इच्छा यह होती है कि मैं संसार में दार्शनिक बन जाऊँ। इस संसार का दिग्दर्शन करने लगूँ और अपना भी दिग्दर्शन करता रहूँ। ऐसी बेटा! प्रत्येक मानव की मनोनीत इच्छा बनी रहती है। मेरी प्यारी माता अपने बाल्य को लोरियों का पान कराती रहती है और उसके मनो की यह इच्छा होती है कि मेरा जो बाल्य है वह आज्ञाकारी हो और पाण्डित्व होना चाहिए और उसके साथ-साथ यह इच्छा होती है कि यह द्रव्यपति भी होना चाहिए। तो यह माता की नाना प्रकार की आकाँक्षाएँ होती हैं। प्रत्येक मानव का, सबका एक ही तारतम्य होता है क्या जीवन प्रकाश में चला जाए, अन्धकार न रहे, जीवन में ऐसी प्रायः देखो मातृ और पितृों की सभी की इच्छा

एकोकी विचार बन जाए तो उसी विचार के सामान्य एक ब्रह्मवेत्ता होता है और एक सहस्र मानो ब्रह्मवेत्ता हों मानो देखो उनके सामान्य एक विवेकी पुरुष होता है और एक मानो देखो जो विवेकी पुरुष जो अमृतम् आत्मा में लीन रहने वाला आत्मतत्व, आत्मा के प्रकाश में ब्रह्माण्ड को दृष्टिपात करने वाला, इन्द्रियों के विषयों को उसी में दृष्टिपात करने वाला मानो सहस्त्रों विवेकियों के सामान्यता में रत्त रहता है क्योंकि परमात्मा के हृदय से उसका मिलान हो गया है।

माता की शिक्षा

तो इस प्रकार मुनिवरो! देखो वेद का वाक् कहता है मैं नहीं कह रहा, वेद का एक-एक मन्त्र हमें उस ऊर्ध्वा पर ले जाने के लिए सदैव तत्पर रहता है। तो माता बड़ी प्रसन्न हुई और माता अपने में उद्गीत गा रही थी मध्यरात्रि का समय हुआ माता ने निश्चय कर लिया कि मैं ब्रह्मवेत्ता के समीप बाल्य को मानो देखो उसको आज्ञा दूँ। प्रातःकाल हुआ माता से पुत्र ने कहा अपनी क्रियाओं से निवृत्त हो करके हे माते! तुमने मुझे आज्ञा नहीं दी, मैं ब्रह्मवेत्ता के समीप चला जाऊँ। उन्होंने कहा जाओ वत्स। तो मेरे प्यारे! देखो जब उन्होंने आज्ञा दी तो वह आज्ञा जब देने लगी तो बोली मेरा नामम ब्रह्मः मानो देखो मेरा नाम जाबाला है, आचार्य कुछ प्रश्न करेंगे तो तुम सत्य उच्चारण करना और जो तुम्हें सत्य का प्रतीत न हो तो तुम मेरे समीप आ जाना, मैं सत्य को उद्गीत गाऊँ। मेरे प्यारे! देखो वह बाल्य सत्यकाम आचार्य के समीप जाने के लिए तत्पर हुआ। माता ने कहा हे बाल्य! जब तू आचार्य के समीप पहुँचेगा तो आचार्य के चरणों को स्पर्श करना और चरणों में अपने नतमस्तिक हो करके और जब तक वह तुम्हें कोई आज्ञा न दे तो तुम वहाँ से अपना प्रस्थान नहीं करना और जब वह कुछ प्रश्न करें तो सत्य उच्चारण करना क्योंकि **सत्य में प्रभु है,** सत्य में

होती है और मानव के हृदय की यह पुकार होती है कि मैं हृदयगामी बनूँ प्रत्येक वस्तु को हृदय में गृहीत करने लगूँ। तो बेटा! यह मानव की इच्छा होती है जैसे विद्यार्थी, ब्रह्मचारी अपने गुरु के कुल में प्रवेश करता है और वह विद्या का अध्ययन करता है तो उसकी सदैव इच्छा यह बनी रहती है कि मेरा जब परीक्षा फल आये मैं मानो अपने में उतीर्ण हो जाऊँ। तो यह सर्वत्र इच्छाएँ जो बनी रहती हैं इसका मूल कारण क्या है? इसका मूल कारण यह कि परमपिता-परमात्मा सदैव महान् है और उसकी महानता के आश्रित मानो यह जगत अपने में क्रियाशील हो रहा है और उन क्रियाओं को प्रत्येक मानव अपने में धारण करना चाहता है और उसकी यह इच्छा बनी रहती है कि मैं धारयामि बनूँ और इस संसार को विजय करने वाला विजेता बनूँ अपने को जितेन्द्रीय बनाता रहूँ परन्तु जैसे वह उपरामता को प्राप्त होता है तो मानवीयत्व में प्रवेश होता रहता है और परमपिता-परमात्मा की एक अनुपम ज्योति में ज्योतिवान् बनने के लिए मनोनीतता की इच्छा बनी रहती है।

राष्ट्र और समाज

तो आओ बेटा! आज मैं तुम्हें इससे पूर्व जो मेरे प्यारे! महानन्द जी ने जो कुछ शब्द उच्चारण किए थे राष्ट्र के प्रति और राष्ट्र को जितेन्द्रीय बनाने के लिए इन्होंने जो अपना मन्तव्य दिया और रूढ़िवाद को नष्ट करने के लिए इन्होंने अपना विचार दिया। तो बेटा! वह जो रूढ़िवाद है वह प्रायः राजा होता ही इसलिए है कि रूढिढवाद को समाप्त करे। जब तक मानव के हृदय से रूढ़ि नहीं जाती जब तक कोई भी क्रियाकलाप पवित्रतता में नहीं आ सकेगा। न तो दीक्षा ही ऊर्ध्वा में प्राप्त होगी और न मानव के हृदयों से एक दूसरे के नष्ट करने की जो प्रवृत्ति है वही समाप्त होगी। यह जब समाप्त होती है जब रूढ़िवाद नहीं रहेगा क्योंकि **ईश्वर और धर्म एक है** और रूढ़ियाँ अनेक होती हैं। जब तक अनेकता को एकता में परणित नहीं कर लिया

जाता जब तक राष्ट्र और समाज ऊँचा नहीं बनता। एक मानव देखो योगेश्वर बनने के लिए तत्पर है और वह नाना प्रकार का प्राणायाम करता है उदान और समान को उसमें प्रवेश मानो उसमें उत्तीर्ण जब ही होता है जब उसका आहार और व्यवहार और मानवीयत्व पवित्रता में धारयामि बना रहेगा तो यह मनोनीत इच्छा बनी रहती है। आज मैं बेटा! इस सम्बन्ध में कोई विचार नहीं देने आया हूँ।

माता का सौभाग्य

आज मैं तुम्हें बेटा! उस स्थली पर ले जाना चाहता हूँ जहाँ माता अपनी लोरियों का पान कराती अपने बाल्य को शिक्षा देती है और यह कहती है हे बाल्य! तू मानो जब प्रबल होगा तो तुझे मिथ्या नहीं उच्चारण करना है। तू सदैव सत्यवादी बन क्योंकि परमात्मा सत्य है। परमात्मा रूढ़ि नहीं है वह एकोकी चेतना है और चेतना के ऊपर तेरा मन्तव्य रहना चाहिए। माता अपने में यह शिक्षा दे रही है और वह माता प्रसन्न हो रही है अपने हृदय की जो पुकार है वह उद्गीत रूप में गा रही है। मेरे प्यारे! जब बाल्य कुछ प्रबल हुआ तो एक समय अपनी माता से बोला हे देव मातम ब्रह्मा हे माता! तूने मुझे ब्रह्म का उपदेश दिया है, हे माता तूने मुझे यह कहा है कि तू दीक्षित होना और परमपिता-परमात्मा सत्य है तू उसके समीप जाना। तो माता मुझे आज्ञा दीजिए मैं आचार्य के समीप जाता हूँ और मैं मृत्यु से पार होना चाहता हूँ, मेरी एक ही आकाँक्षा बनी हुई है। माता बड़ी प्रसन्न हुई। सायँकाल का समय था, माता अपने में प्रसन्न हो रही है और यह उद्गीत गा रही है कि तेरा जो मनोनीत जीवन का उद्देश्य है वह पूर्ण हो गया है। मैं यही चाहती थी कि मेरे गर्भस्थल से जो बाल्य का जन्म हो वह ब्रह्मवेत्ता और ब्रह्मनिष्ठ होना चाहिए क्योंकि ब्रह्मनिष्ठ होना ही यह सौभाग्य की वार्ताएँ हैं, यह हमारा सौभाग्य है। क्योंकि हमारे यहाँ मंगलम् ब्रहे तत्व **मानो सहस्रों राजा जितेन्द्रीय हो जाएँ, उनका**

आत्मा के प्रति मानो देखो आत्मा में उसकी स्थिरता है और प्रकृति रचियता है, प्रकृति का ज्ञान ही संसार में विज्ञान है, प्रकृति का विज्ञान ही विज्ञान है। आत्मा का ज्ञान ही देखो वह विज्ञान से परमात्मा के समीप जाना है और परमात्मा का ज्ञान होना ही मानो देखो मोक्ष का द्वार है।

मेरे प्यारे! देखो जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन कराया तो सत्यकाम मेरे प्यारे! देखो ऋषि के चरणो में ओत-प्रोत हो गया। और यह कहा कि तुम तीन रात्रि आज की दिवस रात्रि मेरे गर्भ में विद्यमान हो और मेरा जो गर्भाश्य है वह ज्ञान का, मोक्ष का मार्ग है। मेरे प्यारे! देखो पिता का जो मार्ग है, देखो तीन वर्ष का जो पिता का मार्ग है वह मानो देखो संसार की आभा है और माता का जो नौ माह है वह रचना का, रचना की आभा है और गणना का एक अन्तिम अक्षय कहलाता है। इस प्रकार बेटा! देखो ऋषि ने ब्रह्मचारी को वर्णन किया और ब्रह्मचारी अपने में मौन हो गया। तो ब्रह्मचारी के मौन हो जाने के पश्चात् रात्रि के काल में ब्रह्मणं ब्रह्मा लोकाम् वाचस्सुतम् देवत्वाम् लोकाम् ब्रह्मचारी ने प्रातःकाल हुआ और प्रातःकाल होते ही उन्होंने कहा प्रभु! मुझे आज्ञा दीजिए। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा जाओ सत्यकाम यह चार सौ गऊँ हैं जब तक एक सहस्त्र गऊएँ नहीं हो जाए तुम गुरु आश्रम की नहीं आना। सत्यकाम ने कहा प्रियतम्।

सत्यकाम का तप

मेरे प्यारे! देखो आचार्य के गर्भ से पृथक हो करके वह गऊओ के मध्य में पहुँचे। उन गऊओं के मध्य में एक वृषभ है मानो जिसे हम बैल के रूप में वर्णन करते रहते हैं, गऊ का बछड़ा है। वह कहता है आओ सत्यकाम, आओ। उन्होंने कहा हे दस्तुतम् तुम्हारे पदार्थ व्रतम् ब्रहे उन्होंने कहा गुरु की आज्ञा का पालन करना है। तो चलो। वह चार सौ गऊओं को ले करके बेटा! वहाँ से गमन करता है और जहाँ

विष्णु है, पालन होता है। माता जब पालन करती है तो उसके द्वारा सत्य का आश्रय होता है यदि सत्य उसके हृदय में नहीं है तो पालना का मूल उत्पन्न नहीं होगा। यदि रजोगुण में पालना होती तो वह तमोगुण की प्रवृत्तियों में रत्त हो जाएगी तो इसीलिए हे ब्रह्मचारी! जब आचार्य के समीप जायेगा तो विद्या जब अध्ययन करता है, आचार्य उपदेश देता है विद्या का तो उसके द्वारा सत्य होगा और वह सत्य के ऊर्ध्वा में कुछ और उद्गीत गाता है तो न देखो उपदेश रहता है, न आचार्य रहता है। माता ने जब इस प्रकार का वाक् उच्चारण किया तो ब्रह्मचारी ने कहा धन्य है माते जो आपने मुझे कहा है मैं वहीं कर पाऊँगा।

महात्मा गौतम सत्यकाम संवाद

मेरे प्यारे! देखो वह भ्रमण करते हुए महर्षि गौतम के द्वार पर पहुँचे और महात्मा गौतम के चरणों में नत-मस्तिक हो गये मानो वह विराजमान हो गये। जब विराजमान हो गये तो मुनिवरो! देखो प्रातःकाल से सायंकाल हो गया, अन्न जल का पान नहीं किया, व्रती बने रहे। सायँकाल को आचार्य ने कहा कहो, ब्रह्मचारी तुम्हारा नामोकरण? उन्होंने कहा मैं सत्यकाम हूँ, माता का नाम जाबाला है। आचार्य ने कहा तुम्हारा गोत्र क्या है? सत्यकाम ने कहा कि मैं गौतम-ब्रहे मैं गोत्र को नहीं जानता। मैं माता से प्रश्न करके आता हूँ। मेरे प्यारे! देखो रात्रि के समय वहाँ से प्रस्थान करते हैं, माता के द्वार पर पहुँचे। माता ने कहा सत्यकाम तुम विद्यालय से चले आये? उन्होंने कहा नहीं, माते आचार्य जी ने गोत्र का प्रश्न किया है। तुम्हारा गोत्र क्या है? जाबाला ने कहा जाओ गोत्राम् बहु-ब्रह्म ब्रहा व्रती देवा वह बोली कि जाओ कहो कि गोत्र का मुझे भी प्रतीत नहीं है। मेरे प्यारे! सत्यकाम ने वहाँ से प्रस्थान किया और भ्रमण करते मानो प्रातम् ब्रहे वह मध्यरात्रि के अन्तिम चरण में आचार्य के द्वार पर आ गये।

प्रातःकाल हुआ। प्रातःकाल होते ही आचार्य ने कहा तुम्हारा गोत्र क्या है सत्यकाम? उन्होंने कहा प्रभु! माता ने ये कहा है कि मैं गोत्र को नहीं जानती। आचार्य ने बेटा उसे ब्राह्मण संज्ञा प्रदान की और यह कहा कि हे ब्रह्मवेत्ताओं! हे जिज्ञासुओ! तुम तो ब्राह्माण हो क्योंकि जो ब्राह्मण है वही सत्यवादी होता है। जो ब्रह्म की आभा में रत्त रहने वाला वह सत्यवादी है। मेरे प्यारे देखो उन्होंने कहा प्रभु जैसे आपका वर्चस्व। सायंकाल हो गया विचार-विनिमय होता रहा। उन्होंने कहा प्रभु! मुझे कुछ आज्ञा दीजिए, मैं आपका शिष्य हूँ, आपका देवत्व ब्रहे आपके देवत्व की पूजा करता हूँ। उन्होंने कहा जाओ तो हे ब्रह्मचारी! रात्रि समय तुम विश्राम करो और रात्रि में तुम मेरे गर्भ में रहो।

आचार्य के तीन दिवस

मेरे प्यारे! देखो आचार्य तीन दिवस अपने गर्भ में ब्रह्मचारी को धारण करता है, माता नौ माह तक अपने गर्भ में धारण करती है, पितृ देखो तीन वर्ष तक अपने गर्भ में धारण करता है और आचार्य तीन रात्रि तक। मेरे प्यारे! देखो माता तो इसलिए करती है क्या यह जो ब्रह्माण्ड है ये नौ खम्बो पर स्थिर रहता है। मेरे प्यारे! देखो पंच-महाभूत हैं, काल और दिशा, आत्मा और एक मन है यह मानो देखो ये नौ में ही यह जगत विद्यमान रहता है। माता के गर्भस्थल में नौ माह में इसका निर्माण होता है और निर्माण करने वाला चैतन्य देव है। तो संसार में नौ पदार्थ हैं और नौ ही तक मुनिवरो! देखो गणना कही जाती है। संसार की नौ तक गणना है आगे शून्य बिन्दु है। आगे मानो देखो उसमें एकाकी चलता द्वितीय भी चलता इसी प्रकार मानो एकादशो से अवृत् प्रारम्भ होता है। मेरे प्यारे! देखो आचार्य तीन वर्ष क्यों धारण करता है क्योंकि तीन में यह जगत विद्यमान है सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण। तो रजोगुण, तमोगुण में मानो देखो उसे उनका ज्ञान करा देता है। हे बाल्य! तुझे सत्य रहना है। हे बाल्य!

तुझे रजोगुण में भी जाना है और तमोगुण में भी प्रवेश होना है। तो इस प्रकार मुनिवरो! देखो आचार्य, पितर देखो उसको अमृत करा देता है और तीन रात्रि मुनिवरो! देखो आचार्य की होती है। आचार्य तीन में ही मुनिवरो! देखो तीन पदार्थो का ज्ञान करा देता है आत्मा, परमात्मा और प्रकृति यह तीन पदार्थ हैं इनका ज्ञान कराता है। वह कहता हे ब्रह्मचारी! तो सबसे प्रथम जो मेरा गर्भाश्य है उसमें मानो ब्रह्म का ज्ञान होना चाहिए। यह ब्रह्म क्या है और ब्रह्म उत्पन्न ब्रहे क्या है और देखो उसके पश्चात तू आत्मा को जान क्योंकि आत्मा ही भोगतव्य में परणित रहने वाला है। और तीन रात्रि मुनिवरो प्रकृति की होती हैं। प्रकृति का ज्ञान करा देता है और यह कहता है कि आत्मा का जो लोक है यह पंच महाभूत है और मुनिवरो! देखो **ब्रह्म का जो लोक है यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड है।** एक-एक कण-कण मानो देखो उसका लोक है और प्रकृति मानो देखो **प्रकृति का जो लोक है वह ब्रह्म है।** ब्रह्म ही प्रकृति का लोक है क्योंकि प्रकृति जब भी स्थिर होती है तो वह ब्रह्म में स्थिर हुआ करती है। तो मेरे पुत्रो! देखो इस प्रकार उन्होंने कहा क्या हे ब्रह्मचारी अमृताम् भूतम् ब्रह्मे लोकाम् मानो देखो परमपिता परमात्मा रचियता है, प्रकृति रचने वाली है और आत्मा मानो देखो उसमें वास को भोगने वाला है। तो सिद्धान्त में, **वेद का सिद्धान्त यह है कि तीन पदार्थ अनादि है बेटा! परमपिता परमात्मा, आत्मा और प्रकृति, इनका किसी भी काल में अक्षय नहीं होता, इनका विनाश नहीं होता** मानो यह सदैव एक रस में बने रहते हैं। यदि देखो प्रकृति का मंडल नहीं रहेगा तो आत्मा का लोक नहीं रहेगा और आत्मा का लोक नहीं रहेगा तो मानो देखो रचने वाला ब्रह्म है, ब्रह्म नहीं होगा तो आत्मा और प्रकृति दोनो अपने में शून्यता में तो रचना का प्रंसग ही नहीं आता। तो वह कहता है हे ब्रह्मचारी! यह तीन रात्रि है तू मेरे गर्भ में स्थित हो और तीन पदार्थो का तुम्हें ज्ञान होना चाहिए। **ज्ञान यह कि परमात्मा के प्रति तुम्हें निष्ठा होनी चाहिए परमात्मा है और**

वह गऊँए जाती वही सत्यकाम जाते। दिवस मानो देखो गऊँओं का दुग्धाहार करना और उसी के दुग्ध और घृत में वह नित्यप्रति मानो याग करते। प्रातःकाल होते ही मुनिवरो! देखो वह पूर्वाभिमुख करते हुए और वह मुनिवरों देखो अग्न्याधान करते और अग्नि को कहते हे अग्नि! तू देवताओ का मुख है और तू देवताओ का मुख हो करके तुझे मेरी भावनाओं को विचारना है। मेरे प्यारे! वह कहते प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा कह करके उदानाय समम्ब्रहे और यह स्वाहा कह करके बेटा देखो अग्न्याधान करते। वेद-मन्त्रों का उद्गीत गा रहा है ब्रह्मचारी, गऊएँ सब शान्त हो करके उनकी ध्वनि को अपने में ध्वनित कर रही हैं। बेटा! यह ध्वनि बड़ी विचित्र है, वेद की ध्वनि बड़ी विचित्र है जो गान रूप में गाता है, हृदय से गाता है। मुझे बेटा! देखो आज मैं दूरी नहीं जाना चाहता हूँ। भगवान् कृष्ण का जीवन जब वह अपनी ध्वनि में ध्वनित होते थे तो गऊएँ सब शान्त हो जाती और वह मानो स्वर ध्वनि उसे बंसरी कहते थे परन्तु बंसरी नहीं उस बंसरी में वह वेद-मन्त्रों का उद्गीत गाते थे और वह उद्गीत गाते मानो गऊएँ प्रसन्न हो जाती दुग्ध देने के लिए तत्पर उन गऊओं का जो दुग्धाहार करता है वह मानो अमृत को पान करता है। वह अमृतमय बन जाता है; उसका जो रजोगुण, तमोगुण वह नष्ट होने लगता है और वह मानो देखो उसके द्वारा ऐसी तरंगों का जन्म होता है जिन तरंगों के ऊपर मुनिवरो! देखो वह तरंगित हो करके द्यौ लोक में प्रवेश कर जाता है। बेटा! मैं बहुत दूरी न चला जाऊँ आज इन वाक्यों को ले करके। विचार-विनिमय केवल यह क्या सत्यकाम जब वेदो का उद्गाते गाते और वह वेद-मन्त्रो का सबसे प्रथम यह भूमिका बनाते वेद-मन्त्रों की प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा कह करके उद्गीत गाते प्रजापति स्वाहा इस प्रकार जब वेद-मन्त्रों का उद्गीत गाते। तो मेरे प्यारे! देखो मन-मस्तिष्क एकाग्र रहना चाहिए। इसलिए

जो षोडश कलाओं को जानने वाला ही षोडश-कलाओं वाला बेटा! **अवतारी** कहलाता है। वहीं तो षोडश कलाएँ कहलाती हैं इनको जानना ही परमात्मा का इनमें अवधान करना है अथवा दर्शन करना है। जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से अन्वेषण करता रहा है, विचार विनिमय करता रहा है। तो मेरे पुत्रो! देखो यह चार कलाएँ हैं जिनका ज्ञान मैं तुम्हें कल प्रगट कर सकूँगा, जिनकी विवेचना जितनी मैं जानता हूँ उतनी वर्णन करूँगा। आज का विचार अब यह सम्पन्न होने जा रहा है आज के विचारों का अभिप्रायः यह कि हम परमपिता परमात्मा की महती उसकी अनन्तता को जानते हुए और अपने मानो देखो अपने जीवन को महान् बनाने का प्रयास करे जिससे हमारा जीवन एक महानता में परणित हो जाए और हम अपने देखो संसार को ऊँचा बनाए।

आत्मवेत्ता

माताओं का कर्तव्य है क्या वह अपने बाल्य को गर्भ स्थल में शिक्षा देना प्रारम्भ करें और लोरियों का पान कराती हुई यदि माता देखो जब अपने में ऊर्ध्वा शिक्षा देती है, सत्यमयी बनाती है तो माता अपने में सौभाग्यशाली बन जाती है। पितृजन मानो देखो रजोगुण, तमोगुण का ज्ञान कराता है तो वह भी सौभाग्यशाली बनता है। उसका बाल्य कदापि ऐसा नहीं हो सकता जो आज्ञा का पालन न करे। वह माता का, पिता का पुत्र आज्ञा का पालन करेगा क्योंकि उन्होंने पितृ याग को जान लिया है। आचार्य की जो मानो देखो वह आचार्य के गर्भ में जो रह गया है वह आचार्य का अपने आचार्य का अपमान नहीं करता वह अपमान ही मानो देखो अपमान को विजय कर लेता है और विजेता बन करके मुनिवरो! अपने में **आत्मवेता** बन जाता है। मेरे प्यारे! देखो आचार्य कदापि अपमानित नहीं होते हैं जो ज्ञान में रत्त रहने वाले हों, जो विवेकी कहलाते हैं।

हमारे यहाँ देखो शतपथ के ऋषि ने कहा है क्या **यजमान जब यज्ञशाला में विद्यमान हो वह अपने मन, मस्तिष्क को एकाग्र करके, प्रसन्न हो करके जब देवताओं के समीप जाता है तो उस देवत्व को प्राप्त होने लगता है,** यह मानो देखो ऋषि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने वर्णन किया है। आज मैं बेटा! देखो उन वाक्यो में न जाता हुआ सत्यकाम ब्रह्मचारी प्रातःकालीन मेरे प्यारे! देखो गऊओं के मध्य में विद्यमान हो करके अग्न्याधान कर रहे हैं और अग्न्याधान करते उनको मुनिवरो! देखो अमृतम ब्रह्मा वह अमृत प्राप्त होने लगा। जब अमृत में प्रवेश होने लगे तो उनकी चित्त की वृत्तियाँ अपने में रत्त हो गई। तो विचार-विनिमय करने का हमारा अभिप्रायः क्या है हम बेटा! देखो उस सत्यकाम की भाँति बने और गऊओ को ले करके बेटा! देखो जब याग करता है, उसके दुग्ध का आहार करता है, उसी दुग्ध के द्वारा देवताओं को प्रसन्न करता है, अग्नि जो अपने अन्तःकरण में प्रदीप्त हो रही है, आपो जो अपने शरीर में प्रवेश कर रहा है और मुनिवरो! देखो वायु जो प्राणों का संचार करने वाला है और पृथ्वी गुरुत्व देने वाली है। इसी प्रकार बेटा! अमृतम ब्रह्मा अन्तरिक्ष में गमन करने वाला मेरे प्यारे! वह पंच-महाभूतों वाला जो लोक है अरे! उसमें ही तो आत्मा वास करता है वही तो आत्मा का लोक है। जैसे एक गृह स्वामी है, गृह स्वामिनी है वह गृह में वास करते हैं परन्तु जब आत्मा का, आत्मा का गृह क्या है बेटा! पंच-महाभूत है। इस पंच-महाभूतों के लोक में ही तो आत्मा वास करता है।

तो आओ बेटा! देखो विचार-विनिमय क्या आज के हमारे विचारों का अभिप्रायः ये कि हम अपने में मानो देखो अपनी प्रतिभा को जानने का प्रयास करें। तो मेरे प्यारे! देखो सत्यकाम इसी प्रकार भ्रमण करते हुए मेरे प्यारे! देखो उन्हें छः माह हो गये और छः माह में उन्हें बेटा! ज्ञान की उपलब्धि होने लगी। अमृत को पान करने वाला ही अमृत

में प्राप्त हो जाता है जितेन्द्रीय बन करके क्योंकि इन्द्रियों को ही तो मृत्यु से पार करना है तब ही तो मृत्युञ्जय बनाता है। मेरे प्यारे! देखो इस प्रकार जब छः माह हुए, छः माह क्या एक वर्ष हो गया। एक वर्ष हो गया तो दो हो गये। बारह वर्ष के पश्चात् मेरे प्यारे! देखो वह चार सौ गऊँए एक सहस्र गऊएँ हो गईं। जब एक सहस्त्र गऊएँ हो गईं एक समय प्रातःकालीन ब्रह्मचारी याग कर रहे थे और याग करके वह **पोमानाय सूक्त** के वेद-मन्त्रों का उदगीत गा करके हूत कर रहे थे। बेटा! जैसे उन्होंने याग सम्पन्न किया उन्हीं गऊओं में से एक वृषभ कहता है गऊ का बछड़ा कहता है हे सत्यकाम! गुरू के आश्रम को चलो हम एक सहस्त्र हो गये हैं और देखो उससे पूर्व मैं तुम्हें एक उपदेश देता हूँ। मानो देखो प्राचीदिक, दक्षिणीदिक और उदीचिदिक और प्रतीचीदिक यह चार प्रकार की कलाएँ हैं मानो जिन चारों कलाओं में ब्रह्मचारी वास करता है। इन चार कलाओं का ज्ञान तुम्हें हो जाना चाहिए सबसे प्रथम प्राचीदिक, दक्षिणीदिक और प्रतीचीदिक और उदीचीदिक। सबसे प्रथम मानो देखो पूर्व दिशा में परमात्मा अग्नि बन करके रहता है और द्वितीय दक्षिणायन में वह परमात्मा इन्द्र बन करके रहता है और प्रतीचीदिक में वही परमात्मा वरूण बन करके रहता है जो वरणीय है और उदीची में मानो देखो वही सोम बन करके रहता है। तो चार कलाओं का बेटा! उन्होंने वर्णन कराया इनकी व्याख्या मैं तुम्हें कल प्रगट करूँगा।

प्रेरणा

आज का विचार केवल हमारा ये कि यदि हमें अपने जीवन को ऊँचा बनाना है, पवित्रतम बनाना है तो परमात्मा को हमें प्राची में, दक्षिण में और पश्चिम में और उत्तरायण में हमें परमात्मा का दर्शन करना है। मानो देखो इसमें वरूण है, सोम है, इन्द्र है और अग्नि है। मानो देखो यह परमात्मा के वाची शब्द हैं इनकी विवेचनाएँ मैं कल प्रगट करूँगा। आज मैंने इन विचारों की भूमिका बनाई है क्योंकि यह

तो मेरे प्यारे! देखो सत्यवादी ही संसार में महान् बनता है क्योंकि **सत्य में प्रभु है, सत्य में प्रकृति है** और मुनिवरो! देखो इन दोनो सत्यों को जानने वाला आत्मा सत्यम ब्रह्मा अवृतम यह आत्मा जानने वाला है। तो यह है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा। आज का वाक् समाप्त, अब वेदों का पठन पाठन।

ओ३म् देवा आभ्याम् मनु गायन्तवा रथम् माम् प्राची गतम् मना आभ्याम् देवाः यम् सर्वाः।

ओ३म् दधिघ्रतामना वाचन्नमः देवाः।

ओ३म् आभ्याम् मनु गायन्तवा।

अच्छा भगवन्।

दिनॉक : ३–अप्रैल–१९९२
समय : रात्रि ८ बजे।

❐❐

में विकसित कर दिया! आज हम उन महान् आत्माओं के आभारी बन रहे हैं। मुनिवरो! कहाँ एक स्थान में राम का राज्यतिलक हो रहा था और कहाँ दूसरे स्थान में माता अपनी महान् वाणी से उच्चारण कर रही थी कि राम को वन ही जाना चाहिये, उस मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने जान लिया कि मैं सँसार में आया हूँ केवल माता-पिता की आज्ञा पालन के लिये और अपने कर्त्तव्यो को पूर्ण करने के लिये। उसी समय राम वन के लिये नियुक्त हो गये और कहा "हे माता! मुझे आज्ञा दो, मैं अवश्य वन जा रहा हूँ।" उसी समय कौशल्या माता ने आज्ञा दी "हे पुत्र! तुम अवश्य वन चले जाओ।" माता की आज्ञा पा करके राम ने पिता का वियोग नहीं माना, केवल कर्त्तव्य जानकर वन चले गये। मुनिवरो! आज का मानव कहाँ जा रहा है? महानन्द जी के कथनानुसार आज मानव को सूक्ष्म सी माया प्राप्त हो जाये तो नाना पापाचार करने को उद्यत है, नाना प्रकार के पापाचार करके द्रव्य को एकत्रित करने की इच्छा कर रहा है। अरे! आज हमें राम बनना है, उस मर्यादा में बाँधना है कि इधर राज्य मिल रहा है, उसकी कोई मग्नता नहीं; वन मिल रहा है उसका कोई शोक नहीं। आज हमें मर्यादा को बाँधकर इस सँसार-सागर से पार होना है।

(१८ अगस्त १९९२, विनय नगर, नही दिल्ली)

राम कैसा था? मेरा राम ऐसा था कि अयोध्या को त्याग करके जब वन प्राप्त होने लगा, वन की प्रतिभा आने लगी तो माता कैकेयी आज्ञा दे रही है कि "राम तुम वन चले जाओ।" वे मग्न हो कर के वन को जा रहे हैं। अहा, अपनी संस्कृति का प्रसार करने के लिये मानो आततायियों को नष्ट करने के लिये।

(दिव्य राम-कथा)

पूज्यपाद गुरुदेव

उद्‌बोधन

परमपिता परमात्मा वरणीय माने गए हैं। जो मानव उसका वरण कर लेता है अथवा उसे वर लेता है, वह प्रायः उसी को प्राप्त हो जाता है। तो इसीलिए हमारा वेद-मन्त्र कहता है, हे मानव! तू उसको अपना वरण बना, उसको वरने वाला बन, क्योंकि वह सर्वत्र विद्यमान है। सँसार में कोई स्थली ऐसी नहीं है जहाँ वह देव न हो, समुद्रों की कोई तरंगे ऐसी नहीं हैं जहाँ वह परमपिता परमात्मा विद्यमान न हो, पर्वतों की कोई भी गुफा ऐसी नहीं है जहाँ वह न हो, तो इसीलिए प्रत्येक मानव को इसमें गम्भीरता से अध्ययन करना चाहिए कि जब वह परमपिता परमात्मा सर्वत्र विद्यमान है, तो हमारे लिए कौन सी स्थली ऐसी है जहाँ हम मिथ्यावाद में परणित हो जायें। पाप-कर्म करने के लिए तत्पर हो जायें, क्योंकि वह न्यायकारी है, न्याय ठीक कहलाता है। एक मानव राजा न्यायालय में विद्यमान रहता है परन्तु वह न्याय कर रहा है, बहुत सा पाप-कर्म ऐसा है जो राजा से ओझल रहता है, क्योंकि वह अनभिज्ञ है। वह परमपिता परमात्मा तुम्हारे मनस्तत्व कर्मों की प्रतिभा को दृष्टिपात कर रहा है। जब कोई भी स्थिली ऐसी नहीं है, जहाँ वह विद्यमान न हो, तो उसका न्याय भी विशाल है, उसके न्याय से कोई कर्म मानव का ओझल नहीं होता। तो इसीलिए परमपिता परमात्मा को जो मानव अपना वरणीय बना लेता है अथवा उसे वर लेता है, तो मुनिवरो! देखो वह मानव महान् बन जाता है, वह पवित्र बन जाता है। इस सँसार में नाना प्रकार के, नाना प्रकार की क्रियाओं में रमण करने वाला मानव स्वार्थ में परणित हो सकता है, परन्तु परमपिता परमात्मा ऐसा अमूल्य है, ऐसा महान् है कि उसकी महानता प्रत्येक वस्तु में विद्यमान रहती है। तो इसीलिए हमें उस परमपिता परमात्मा को अपना वरुण बना लेना चाहिए, अथवा वर लेना चाहिए। (पूष्प नं. 52 प्रवचन 12 नवम्बर 1983)

पूज्यपाद गुरुदेव

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम

जिस समय भगवान् राम वन को चले गये जा रहे थे, उस समय मन्त्री ने कहा था कि "हे राम! तुम अयोध्या को चलो। मैं तो तुम्हें मार्ग दिखाने को आया था, तुम वन को न जाओ।" उस समय भगवान् राम ने कहा था कि "मैं सँसार में मर्यादा बाँधने के लिए आया हूँ। मैं बहुत ही जन्मों से चलता हुआ आया हूँ, परन्तु आज मेरे लिये कोई कर्म शेष नहीं रहा है। केवल मर्यादा बाँधने के लिए सँसार में आया हूँ और मुझे मर्यादा-प्रदर्शन करना है। आज मुझे यह निर्णय कर देना है कि माता-पिता की आज्ञा पालन करने में मुझे संकोच नहीं और न ही मुझे कोई कष्ट है।" उस मर्यादा पुरुषोत्तम ने यह किया कि उसी सुबह को अयोध्या को त्याग करने वन को चल दिये।

(६–११–१९६२, महरौली, दिल्ली)

वशिष्ठ मुनि महाराज की शिक्षा से मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने क्या किया? माता की आज्ञा पा करके वन चले गये। उनकी भुजाओं की कोमलता उनके शरीर की कोमलता ऐसी विलक्षण थी कि देखकर मानव चकित हो जाता था। राज्य-स्थानों में विश्राम करने वाले थे परन्तु पर्वतों की शय्या स्वीकार कर ली। केवल उस मर्यादा को बाँधने के लिये, माता की आज्ञा का पालन करने के लिए वनों में चले गये। आधुनिक काल तो ऐसा है जैसा मेरे प्यारे महानन्द जी ने एक काल में कहा कि यदि द्रव्य मिल रहा है और माता कहे कि द्रव्य को न प्राप्त करो, तो माता को ही नष्ट कर देवें और कहे कि यह मुझे राज्य नहीं भोगने देती वन दे रही है।" मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने माता की आज्ञा पा कर के मर्यादा बाँधी और राज्य से वन को चले गये।

भगवान् राम ने कितनी सुन्दर आज्ञा का पालन किया, वह कितने ऊँचे योगी और महान् आत्मा वाले थे, जिन्होंने सँसार को पुनः मर्यादा

दीपावली

आज परम्परा का वह पुनीत दिवस है जिस सुन्दर पर्व में कृषक अपने गृहों में याज्ञिक कर्म किया करते थे। मुझे वह स्मरण आता रहता है जिस काल में कृषक अपनी भूमि के गर्भ में बीज की स्थापना करके यज्ञ कर्म किया करते और प्रभु से याचना करते हे प्रभु! हमारा सुन्दर अवसर हे, हम यह चाहते हैं कि हमने वसुन्धरा के गर्भ में बीज की स्थापना की है, हे प्रभु! उसके लिए परिजन्य दे, उसके लिए जल, औषध प्रदान कर, जिसे हमारी यह कृषि महान् उत्तम बने और हम याज्ञिक बनें। हमने यज्ञ तो कर दिया त्याग का, अब हम अपने गृह में देवयज्ञ करना चाहते हैं तो देवयज्ञ प्रत्येक कृषक के गृह में वास्तव में अनिवार्य था। हमारे यहाँ परम्परा से ही ऐसा माना गया है। कृषक के यहाँ जब यज्ञ कर्म होता है तो उपासना प्रभु से की जाती है, देवताओं से की जाती है। हे देववत्! हमारे जो कृषि है उससे हमारे लिए सुन्दर अन्न की उत्पत्ति होनी चाहिये, क्योंकि अन्न से ही तो हमारा जीवन बनेगा, पवित्रता आयेगी। हे प्रभु! हम यज्ञ कर्म करने वाले हों।

तो मुनिवरो! यह वह सुन्दर पर्व दीपमालिका कहलाती है, जिस सुन्दर दीपमालिका में राजा महाराजाओं के यहाँ सुन्दर यज्ञ कर्म होते। कैसे यज्ञ? ऋषि-मुनियों को, ब्रह्मचारियों को भयंकर वनो से ले जाया जाता। मुझे भी बेटा! कई-कई काल में नाना राजाओं के यहाँ यज्ञ कराने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। त्रेता काल में राजा रावण के यहाँ भी यह परम्परा थी और भी नाना राज्यों में इस प्रकार की परम्परा कहलाई जाती थी। हमारे यहाँ तो वैदिक साहित्य की यह परम्परा होती है। दीपमालिका का अभिप्राय है कि प्रत्येक गृह में वह दीप होना चाहिए, जिस दीप में कृति होनी चाहिए, जिसमें प्रतिभा, विचार, मानव

प्रत्येक मानव को गोपिकाओं से विनोद करना चाहिए। गोपिकाएँ कया है? मानव के द्वारा जो संकल्प विकल्प होते हैं, उनका नाम गोपनीय विषय कहा जाता है। जब हम उस गोपनीय विषय को विचारते हैं, उनका मन्थन करते हैं तो एक समय में देवता बनने की हमारे द्वारा प्रवृति आई तो देवता बन गये और एक क्षण समय आया तो असुर बन गये। अब विचारना है कि हम असुर क्यों बन गये? इस पर मन्थन करना, इन पर विचार करना प्रत्येक मानव, प्रत्येक देव कन्या का कर्तव्य है कि जब मानव इन पर विचार करता है तो गोपनीय विषय को विचारता है। यह विचारने की विद्या कहाँ से आती है। बेटा! आज भगवान् कृष्ण को कहा जाता है कि उनके सोलह हजार आठ गोपिकाएँ थीं, जो उनकी पत्नियाँ थीं। वह क्या थीं? बेटा, भगवान कृष्ण को सोलह हजार आठ वेद की ऋचाएँ कण्ठस्थ थीं और वे उनमें रमण करते रहते थे, उनका मन्थन करते रहते थे उस समय उन्हें न भोजन ही स्मरण आता था, न सँसार स्मरण आता था। वे उनमें विनोद करते अन्तरात्मा में चले जाते। तो जब हम इन वेद मन्त्र रूपी गोपिकाओं को विचारते है, अपनी प्रवृत्तियों को विचारते हैं तो हमारा जीवन एक नवीन बन जाता है। नवीन धारा हमारे हृदय में प्रवष्टि हो जाती है, हमारा अन्तःकरण पवित्र हो जाता है और हम पाँचों प्रकार के कर्मों को सुगमता से विचार लेते हैं।

(आठवा पुष्प प्रवचन 11 मई 1967)

पूज्यपाद गुरुदेव

के विचार की सुगन्धि, प्रत्येक इन्द्रिय की जो कर्मठता है, वह हमें इस दीपमालिका से ही सिद्ध होती है कि हमारी प्रत्येक इन्द्रिय प्रकाशमान होनी चाहिए। रात्रि भी हमारी प्रकाशमय होनी चाहिए! अन्धकार हमारे जीवन को छू न पाये। अज्ञान मानव को उस काल में छूआ करता है जब मानव के द्वारा अज्ञानवाद होता है, उस अज्ञान में ही तो मानव की मृत्यु होती है। आज हमें मृत्यु से पार होना है। मृत्यु को उलांघना है। **मृत्यु को उलांघने का कोई कर्म है तो वह यज्ञ कर्म है।** उससे मानव की प्रतिष्ठा में अन्तर्द्वन्द्व नहीं होता इसलिए प्रत्येक स्थानों में यज्ञ कर्म की प्रतिभा हमारे मस्तिष्कों में होनी चाहिये।

(पुष्प नं. 13 प्रवचन दिनॉक 9 नवम्बर 1969)

पूज्यपाद गुरुदेव

सूचना

सभी आजीवन सदस्यों को यौगिक प्रवचन मासिक पत्रिका भेजी जा रही है। पत्रिका प्रत्येक मास की 10\11 तारीख को प्रेषित की जाती है। किसी आजीवन/वार्षिक सदस्य को पत्रिका प्राप्त न होने की स्थिति में हमें एक सप्ताह के बाद लिखें। सूचना मिलने पर पत्रिका पुनः प्रेषित करेंगे।

डॉ. मधुसूदन, ए-59 पँचशील एन्क्लेव, नई दिल्ली 110017

दूरभाष : (0) 11-26498737

E-Mail :-contact@shringirishi.in

बेवसाईट (www.shringirishi.in)

वैदिक अनुसन्धान समिति (पंजी.)

भगवान् कृष्ण की सोलह हजार गोपीकाएँ

आधुनिक काल का ऐसा मत है, भगवान् कृष्ण के सम्बन्ध में कि उनकी सोलह हजार आठ गोप-गोपकाएँ थीं। जिसमें सत्यभामा, रुक्मिणी आदि आठ पटरानी कहलाती थीं। ये प्रमुख रानियाँ कहलाती थीं, उनकी और सोलह हजार, गोपियाँ थीं जिनके साथ वो विनोद करते थे। लेकिन कई काल में पूज्यपाद गुरुदेव ने वर्णन करते हुए कहा था कि भगवान् कृष्ण आठ चक्रों को जानते थे, आठों चक्रकों को जानकर आठों सिद्धियों को जानते थे और सोलह हजार वेद-मन्त्रों के गोपनीय विषयों को जानते थे। वह सदैव उनमें विनोद करते रहते थे। आधुनिक जगत् ने उनके अर्थों का अनर्थ कर दिया है। ऐसा भी हमारे जीवन में आता है कि उन गोपनीय विषयों को षोडश-कलाओं में नियुक्त माना गया है। इसलिए सोलह कलाएँ होती हैं, ब्रह्म की षोडश-कलाएँ हैं और उन षोडश-कलाओं की तरङ्गे होती हैं। मानव के शरीर में आठ चक्र हैं और नौ द्वार होते हैं। इसी प्रकार उन सब क्रियाकलापों को भगवान् कृष्ण जानते थे। मुझे स्मण है जब कंस को विजय करने के पश्चात् महाराजा कृष्ण समुद्र के तट पर विराजमान हो गए थे, तो वहाँ तपस्या करते रहे। उन्होंने बारह-बारह वर्षों तक तप किया ऐसे तपस्वी को देवियों से विनोद करने वाला कहना यह तो अज्ञान है। न जानकर अर्थों का अनर्थ नहीं होना चाहिए। अर्थों का अनर्थ हो करके महापुरुषों के जीवन की आभा समाप्त हो जाती है। महापुरुषों का किया हुआ क्रिया-कलाप समाप्त हो जाता है। उसमें रूढ़ि आ जाती है और वह रूढ़ि ही उन महापुरुषों को ऐसे विडम्बित कर देती है जैसे जीवित मानव को अग्नि में दाह कर देते हैं। वह मानव विडम्बित होता है। ऐसे ही महान् आत्मा विडम्बित होती रहती है।

(पैतिसवाँ पुष्प, ग्रीन पार्क, ६ नवम्बर, १९७७)

18.	Seth Hari Ram Gupta Wazirpuri, Indus, Area, New Delhi	Donation	2100/-
19.	R.K. Goel, Rajasthali Apartment Delhi	Donation	501/-
20.	Hitender, 251, Delhi Gate, N. Delhi	Donation	1101/-
21.	Shiksha Wati, Meerut	Donation	100/-
22.	Pratap Singh S/o Sh. Karam Singh V&PO Phaphunda Distt Meerut	Donation	100/-
23.	Bharat Kumar Ji, B-3/A-1, IIT New Delhi	Donation	1100/-
24.	Ms. Anjanaji, Deva Ram Park, Tri Nagar, New Delhi	Donation	101/-
25.	Mrs. Shakuntlaji, IIT, New Delhi	Donation	51/-
26.	Raj Kumar Tyagi, Pandhra	Donation	101/-
27.	Mool Chandji B-3/A-1, IIT New Delhi	Donation	151/-
28.	Yad Ramji, Behmora	Donation	100/-
29.	Suchet Singh, Bhabhora	Donation	50/-
30.	Ravinderji, Ghaziabad	Donation	100/-
31.	Madan Yadav, Noida	Donation	100/-
32.	Mahender Kr, Tyagi, Barnava	Donation	105/-
33.	Narender Pal Singhji Vill. Harara	Donation	100/-
34.	Rajpal Vanprasthi, Vill. Bhagoi, Sardhana, Meerut	Donation	100/-
35.	Santosh Tyagi W/o Sh. B.D. Tyagi 21-A, Muraripuram, Meerut (M. 9997977778)	Donation	1100/-
36.	Manojji, Baraut	Donation	50/-
37.	Chetan Singh, Teacher, Shahkurlapur, Salpur	Donation	100/-
38.	Brajesh Kumar, BSF Wale, Shahkurlapur Post Maujpur, Meerut	Donation	500/-
39.	Shiv Raj Tyagi, Dushyant Tyagi, Vill. Dinkarpur	Donation	101/-
40.	Gupt	Donation	101/-
41.	Jeetu Singh Vill. Shahkurlapur, PO Maanpur Distt. Meerut	Donation	50/-
42.	Manoj & Bani Tyagi, Dinkarpur	Donation	51/-
43.	Manojji, Barnava	Donation	50/-
44.	Poonam & Anitaji, Mechra	Donation	100/-

अनिल त्यागी

वैशनवी वंशिका

श्रीमति कृष्णा देवी धर्मपत्नी स्व. श्री अनिल त्यागी पुत्र श्री राजेश्वर त्यागी निवासी ग्राम पुर्सी, मुरादनगर जिला गाजियाबाद (उ.प्र.) ने अपने स्वर्गीय पति के जन्मदिवस के आगमन पर एवम् पौत्री वैशनवी, वंशिका के दिनॉक 6 मार्च 2006 व 15 जून 2007 के क्रमशः जन्मदिवस के शुभअवसर पर 1303 रु. का सात्विक सहयोग मासिक पत्रिका के प्रकाशन के लिए किया है। समिति इसके लिए हृदय से आभार प्रकट करती है।

श्रीमति कृष्णा देवी ग्राम खुरमपुर-सलेमाबाद की पुत्री है और पूज्यपाद गुरुदेव के प्रति जन्म से ही जुड़ी हुई है। एवम् अत्यन्त श्रद्धा रखती है। इसी धारा को आगे बढ़ाते हुए आपने गुरुकुल लाक्षागृह बरनावा के विद्यालय में एक कक्ष का निर्माण कराया है। पुनः से इस परिवार का आभार प्रकट करते हैं और परमपिता परमात्मा से सुख व समृद्धि की कामना करते हैं।

वैदिक अनुसंधान समिति

आस्था

श्रीमति ब्रजबाला धर्मपत्नी श्री राजकिशोर त्यागी निवासी ग्राम मकनपुर, जिला गाजियाबाद (उ.प्र.) ने अपनी पौत्री आस्था के शुभ जनमदिवस के शुभअवसर पर 1101 रु. का सहयोग मासिक पत्रिका के प्रकाशन के लिए प्रदान किया है। यह परिवार पूज्यपाद गुरुदेव के प्रति अत्यन्त श्रद्धा रखता है और अपने जीवन में दैनिक यज्ञ एवम् वार्षिक यज्ञ करते हुए अपने जीवन को ऊर्ध्वागति में ले जाने में सलग्न है। गुरुकुल लाक्षागृह बरनावा के विद्यालय में एक कक्ष का निर्माण इस परिवार ने कराते हुए पूज्यपाद गुरुदेव के प्रति अपनी श्रद्धा समर्पित की है।

समिति हृदय से हार्दिक धन्यवाद करती है। और पौत्री एवम् परिवार के सभी सदस्यों के सुख, शान्ति एवम् समृद्धि के लिए परमपिता परमात्मा से विनय करती है।

वैदिक अनुसंधान समिति

दान

वैदिक अनुसन्धान समीति के प्रकाशन के कार्य के लिए निम्न याज्ञिक एवम् श्रद्धालू महानुभावओं ने अपना सात्विक सहयोग प्रदान किया है

1.	Nahar Singh Ikhtiarpur, Meerut	Donation	51/-
2.	Master Vihan Tyagi S/o Sh. Ankit Tyagi Gr. S/o Sh. Ram Avtar Tyagi Patrika (Photo to be published) 356, Sector 11, Vasundhra, Ghaziabad (Mobile No. 9927257170)	Donation	1100/-
3.	Subhash Chander Verma Baraut	Donation	51/-
4.	Jaivinder Singh Murad Nagar, Palika	Donation	51/-
5.	Rajender Tyagi, Murad Nagar	Donation	51/-
6.	Anil Kumar Verma Barnava	Donation	501/-
7.	Anil Tyagi, Meerut	Donation	1100/-
8.	Shiv Kumar Rastogi, E-34, Jawahar Park, Laxmi Nagar, Delhi	Donation	501/-
9.	Satish Kumar, Baraut	Donation	51/-
10.	Mrs Pushpa Tyagi, Kaithwari	Donation	50/-
11.	Virender Kumar Singhal 306, Pragati Nagar, Meerut	Donation	101/-
12.	Suresh Chander Gupta 489/3, Shastri Nagar, Meerut	Donation	50/-
13.	Dharamveer Singh Harra, Meerut	Donation	105/-
14.	Shyam Singh, Kakra Muzaffar Nagar	Donation	51/-
15.	Kaushik, New Delhi	Donation	140/-
16.	Smt Kamla Deswal, 37/10, 3rd Floor Old Rajendra Nagar, New Delhi	Donation	1100/-
17.	Bishamwar Dayalji Sabzi Mandi, Delhi	Donation	1100/-

चतुर्वेद पारायण ब्रह्म महायाग

(सामूहिक)

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) के शुभाशीर्वाद से चतुर्वेद पारायण ब्रह्म महायाग का आयोजन रामलीला मैदान, गाँधी नगर **सरधना** (मेरठ) में दिनाँक 16-10-2011 से 23-10-2011 तक सार्वजनिक सहयोग से आयोजित किया जा रहा है। आप इस महायज्ञ में अपने परिवार एवम् अपने सगे सम्बन्धियों सहित सादर आमन्त्रित हैं। अतः इस महायज्ञ में पधार कर पुण्य लाभ अर्जित करे एवम् तन-मन-धन से सहयोग प्रदान करें।

निवेदक व आयोजक

श्री कन्हैया लाल त्यागी (प्रधान) श्री कर्ण गोस्वामी (मन्त्री) श्री बीरसिंह, व श्री राधेश्याम (कोषाध्यक्ष)

एवम्

सभी सदस्य गण वैदिक यज्ञ समीति, सरधना।

सभी क्षेत्रीय आर्य समाज, सरधना क्षेत्र मेरठ।

सूचना

वैदिक अनुसंधान समिति के आजीवन सदस्य बनने के लिए शुल्क 800 रु. और वार्षिक सदस्य बनने के लिए 100 रु. है जिसको आप समिति के पते पर व प्रकाशन मंत्री के पते पर डाक द्वारा भेजकर सदस्य बन सकते हैं।

45.	Chandershekar Tyagi S/o Narender Singh Tyagi Makanpur, Ghaziabad	Donation	501/-
46.	Ravinderji, Chandrayan	Donation	100/-
47.	Sushil Kr. Sharma, J-55 Pandav Nagar, New Delhi	Donation	101/-
48.	Kashi Ram & Gyani Ramji Azampur, Mulsam	Donation	101/-
49.	Ms Kavitaji, Meerut	Donation	101/-
50.	Anil Tyagi, Rs. 1100/-Vaishnavi Rs. 101/- & Vangika Rs. 101/-(On the occasion of birthday of their Children) Vill. Kurshi, Muradnagar	Donation	1302/-
51.	Vishav Paliji, Vill. Daha	Donation	101/-
52.	Yogender Singh, Bulandshahr	Donation	500/-
53.	Dariyav Singh, Noida	Donation	25/-
54.	Om Prakash Malik (Rs. 51/-) & Surender Arya (Rs. 51) Vill. Gohna, Muzaffar Nagar	Donation	102/-
55.	Vipin Tyagi, 2071, Sector-4, Vasundhara, Ghaziabad	Donation	1100/-
56.	Mool Chandji, Dhanora	Donation	100/-
57.	Ch. Lahri Singh, Vill. Kaserwa, Muzaffar Nagar	Donation	501/-
58.	Ved Pal Arya, Gagol	Donation	100/-
59.	Chandra Prakashji, Karkpur	Donation	50/-
60.	Anil Tyagi	Donation	51/-
61.	Sanjay Tyagi, Barnava	Donation	51/-
62.	Shri Bhagwanji, Dholda	Donation	101/-
63.	Ms Sharda Devi, Vill & Distt Bagpat	Donation	1100/-
64.	Gudduji, Kamala	Donation	51/-
65.	Chhod Sharma, Kamala	Donation	51/-
66.	Krishan Palji, Kamala	Donation	51/-
67.	Mahender Singh Ji, Rajpura	Donation	40/-
68.	Shri Bhagwanji, Wazirpur	Donation	50/-
69.	Jai Prakash Tyagi, Secretary, Makanpur	Donation	1100/-
70.	Jai Singh Ji, Hera	Donation	101/-
71.	Kavita, Nizampur, Muzaffar Nagar	Donation	11/-

72.	Surender Kumar, Meerut	Donation	21/-
73.	Ashok Tyagi, Haridwar	Donation	100/-
74.	Brijesh Kumar, Daputalwa, Meerut	Donation	51/-
75.	Ms Subhadra, Belapur	Donation	11/-
76.	Ms. Munni, Maina Kothi	Donation	21/-
77.	Gupt Daan	Donation	21/-
78.	Lokeshji, Harra	Donation	100/-
79.	Gupt Daan	Donation	11/-
80.	Mukesh Kumar, Palda	Donation	105/-
81.	Gupt Daan	Donation	20/-
82.	Madan	Donation	10/-
83.	Bhullan, Jiwana	Donation	21/-
84.	Tilak Raj, Meerut	Donation	100/-
85.	Raj Pal Singh, Bambawar	Donation	151/-
86.	Tilak Raj Sharma, B-10/2, Laxman Park, Chander Nagar, Delhi-51	Donation	101/-
87.	Harender Choudary, Gagan Vihar, Meerut	Donation	100/-
88.	Kavita Arya	Donation	11/-
89.	Chaul Singh, Kaithwari	Donation	21/-
90.	Omdut Tyagi, Kannoja	Donation	100/-
91.	Umesh Sain, Kannoj	Donation	50/-
92.	Rahul Kumar, Shahpura	Donation	20/-
93.	Harbir Singh Arya, Sirsarta	Donation	50/-
94.	Badhadutt Pradhan, Galhatta	Donation	51/-
95.	Ram Niwas, Vill. Incholi	Donation	51/-
96.	Vineetji, Karnwal	Donation	51/-
97.	Dipanshu, Kuralasha	Donation	51/-
98.	Manoj Kr. Barnava, Karnawal	Donation	51/-
99.	Gupt Daan	Donation	10/-
100.	Dhanu S/o Rakesh Garg	Donation	150/-
101.	Mahesh Tyagi, Vill. Ghishwari, Saharanpur	Donation	101/-
102.	Barumal Arya, Binoli	Donation	51/-
103.	Satpal, Mainaputhi, Meerut	Donation	21/-
104.	Darshan Lal Aggarwal, Delhi	Donation	251/-
105.	Yogi S/o Sh. Brijnandan, Kakra	Donation	20/-
106.	Gupt Daan	Donation	50/-

107.	Pramod Tyagi, Kaithwari	Donation	100/-
108.	Rakshit Bhardwaj, Gurgaon (On the occasion of Birthday on 7th June)	Donation	1100/-
109.	Neelam Bhatia, Gurgaon	Donation	5100/-
110.	Shiv Kumar Sharma, Nanglaoder, Sardana Meerut	Donation	101/-
111.	Brij Khosla & Family, New Delhi	Donation	5100/-
112.	Mrs. Robila, Sidharth Gupta & Family, New Delhi	Donation	5100/-
113.	Akshay Shyamli	Donation	100/-
114.	Vedi Ram Yadav, Shadbhar, Baghpat (Member No. 408)	Donation	101/-
115.	Neera Tyagi, Ghaziabad	Donation	100/-
116.	Dayaram Rasna	Donation	50/-
117.	Smt Sumitra Davi & Sri Vivek Tyagi Hapur	Donation	2100/-
118.	Sri Rakesh Sharma Model Town Panipat	Donation	2100/-

सभी उपरोक्त दान दाताओं का समीति हृदय से आभार प्रकट करती है और उनको परिवार सहित जीवन में सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसंधान समिति

नम्रनिवेदन

सभी विदेश में जाने वाली पत्रिकाओं के आजीवन सदस्यों से नम्रनिवेदन है कि जिन महानुभाव ने मासिक पत्रिका भेजने के लिए वार्षिक डाक खर्च अभी तक नहीं भेजा है वे कृपया 400 रु. भेजने की कृपा करे।

अक्टूबर 2011/यौगिक प्रवचन

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य संहीता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध हैः

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जि. बागपत, (उ. प्र.)। दूरभाष : 01234 240395
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिणी भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। दूरभाष : 0131 2606414
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष : 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदन, A-59 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली। 110017 दूरभाष : 011-26498737
5. श्री सुशील त्यागी, सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ. प्र.)। दूरभाष : 0120-4165802
6. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ. प्र.) दूरभाष : 9412002233
7. सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएड़ा, (उ. प्र.) दूरभाष : 9313530505
8. श्री विवेक त्यागी, 16, अशोक कॉलोनो, अल्कापुरी, हापुड, (उ. प्र.)। दूरभाष : 0122-2316196
9. मैं. हर्ष मोडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110, मार्किट नोएडा, (उ. प्र.) फेस-2, दूरभाष : 0120-6417159, 9873185418
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरयाणा।
11. श्रीमती बाला, 251, दिल्ली गेट, नई दिल्ली। दूरभाष : 011-23282088
12. श्री पूनम त्यागी, 96-A, सैक्टर-10 नोएडा, उत्तर प्रदेश।
13. मैं. गोविन्द राम, हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष : 011-23977216
14. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)।
15. श्री सुनील बंसल, ई. 129, गली नं. 8, सरूप नगर, दाता मन्दिर के पास, नई दिल्ली 110042
16. जवाहर बुक डिपो, बुढ़ाना गेट, आर्य समाज मेरठ शहर (उ. प्र.)।

वर्ष 40 अंक 469
अक्टूबर, 2011

मूल्य :
पाँच रूपये

POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-10-2011

अक्टूबर 2011/यौगिक प्रवचन